SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume 1, Issue 7, july 2024
www.shodhpatra.org | shodhpatra.org@gmail.com

जनसंख्या प्रवास प्रतिरूप एवं आर्थिक परिवर्तन : कुमाऊं मंडल का एक भौगोलिक विश्लेषण

[1]Raghwendra Kumar Yadav, [2]Dr. Rana Pratap Yadav

[1]Research Scholar, Department of Geography, VSSD College Kanpur U.P.

[2]Associate Professor, Department of Geography, VSSD College Kanpur U.P.

सारांश **–** भारत के उत्तरी भाग में स्थित उत्तराखंड राज्य का निर्माण 9 नवंबर 2000 को हुआ था इस राज्य की भौगोलिक दृष्टि से विशेष स्थलाकृतिक विशेषताएं हैं। जिसके आधार पर इस राज्य को 2 मंडलों गढ़वाल एवं कुमायूं मंडल में विभाजित किया गया है गढ़वाल मंडल में 7 जिले हैं जबकि कुमायूं मंडल में कुल 6 जिले शामिल हैं। उत्तराखंड राज्य सबसे तेजी से विकास करने वाले राज्यों में से एक है। कुमाऊं क्षेत्र के पहाड़ी जिलों में लम्बे समय से प्रतीक्षित विकास ने इन जिलों के विकास को कुमाऊं क्षेत्र के अन्य मैदानी जिलों की तुलना में पीछे धकेल दिया है। इसके परिणामस्वरूप इन जिलों से प्रमुख कार्यबल का लगातार पलायन हुआ है, जिसमें बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों के पुरुष, युवा शामिल हैं। इससे इन जिलों की अर्थव्यवस्था पर दबाव पड़ा है। कुमाऊं क्षेत्र के पहाड़ी जिले मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं, उद्योगों की स्थापना मुख्य रूप से क्षेत्र के दो मैदानी जिलों में हुई है, जो इस क्षेत्र में प्रवास का प्रमुख कारण है। पलायन का प्रमुख कारण कुमाऊँ क्षेत्र के पर्वतीय क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए सरकारी पहल की कमी, पर्यटन और कृषि को बढ़ावा देने में विफलता है। अधिक आर्थिक अवसरों से लाभान्वित होने के लिए कुमाऊं क्षेत्रों में शहरों की ओर प्रवास सबसे अधिक दर्ज किया गया है।

शब्द कुंजी– **प्रवासन, उत्तराखंड, अर्थव्यवस्था, भौगोलिक दृष्टि आर्थिक परिवर्तन।**

परिचय –

भारत के उत्तरी भाग में स्थित उत्तराखंड राज्य का निर्माण 9 नवंबर 2000 को हुआ था इस राज्य की भौगोलिक दृष्टि से विशेष स्थलाकृतिक विशेषताएं हैं। जिसके आधार पर इस राज्य को 2

मंडलों गढ़वाल एवं कुमायूं मंडल में विभाजित किया गया है गढ़वाल मंडल में 7 जिले हैं जबकि कुमायूं मंडल में कुल 6 जिले शामिल हैं।

कुमायूं मंडल के 5 जिले पहाड़ी क्षेत्र वाले हैं जबकि उधम सिंह नगर आंशिक रूप से एक समतल क्षेत्र वाला जिला है। उत्तराखंड राज्य का निर्माण उत्तर प्रदेश से अलग होकर अधिक विकास गति प्राप्त करने के उद्देश्य से किया गया था, क्योंकि उत्तर प्रदेश के अंतर्गत यह क्षेत्र पिछड़े क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया था। उत्तराखंड राज्य बनने के बाद भारत के अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक तेजी से विकास किया, जो शीघ्र ही भारत का दूसरा सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाला राज्य बन गया। उत्तराखंड राज्य में विभिन्न उद्योगों की स्थापना सफलतापूर्वक की गई है, इसके अलावा पर्यटन, परिवहन, सेवा क्षेत्र एवं कृषि भी राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, फिर भी यदि राज्य में होने वाले प्रवसन के संदर्भ में पिछले 10 वर्षो के आंकड़ों को देखा जाए तो यह राज्य के लिए एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। एक अध्ययन के अनुसार उत्तराखंड राज्य में 1053 गाँव में कोई निवासी नहीं है।

उत्तराखंड भारत के उत्तरी भाग में स्थित पहाड़ी राज्यों में से एक अत्यंत सांस्कृतिक रूप से खूबसूरत राज्य है। यहाँ की संस्कृति अनेक विशेषताओं को समेटे हुए हैं। यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से दो क्षेत्रों में विभाजित है जिन्हें गढ़वाल व कुमाऊं कहा जाता है, दोनों क्षेत्र हिमालय की कुमायूं पर्वत श्रृंखलाओं के अंतर्गत आते हैं। उत्तराखंड में अनेक प्रसिद्ध मंदिर स्थित है, इसीलिए इसे देवभूमि भी कहा जाता है। उत्तराखंड हिमालय की भाबर एवं तराई के चलते प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण है। उत्तराखंड राज्य का कुल क्षेत्रफल 53484 वर्गकिलोमीटर है , जिसमें से 86 प्रतिशत पर्वतीय तथा 65 प्रतिशत जंगल से आच्छादित है। उत्तराखंड के उत्तरी क्षेत्र उच्च या ग्रेटर हिमालय की चोटियों एवं हिमनद से परिपूर्ण ळें

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखंड की कुल जनसंख्या एक करोड़ 10116752 है, जिसमें से 69.45 प्रतिशत आबादी ग्रामीण तथा शेष नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है। यहाँ का जनसंख्या घनत्व 189 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। देहरादून राज्य की अंतरिम राजधानी एवं सबसे बड़ा नगर है। राज्य के मूल निवासी आम तौर पर अपने क्षेत्र के स्थान के आधार पर उत्तराखंडी या अधिक विशेष रूप से गढ़वाली या कुमाऊनी कहलाते हैं। राज्य की लगभग 83

प्रतिशत जनसंख्या धार्मिक रूप से हिन्दू संस्कृति का अनुसरण करती है, इसके उपरान्त यहाँ पर इस्लाम सिक्ख, बौद्ध एवं जैन, ईसाई धर्म के लोग भी निवास करते हैं। यहाँ की अधिकारिक भाषा हिन्दी तथा द्वितीय अधिकारिक भाषा संस्कृत है।

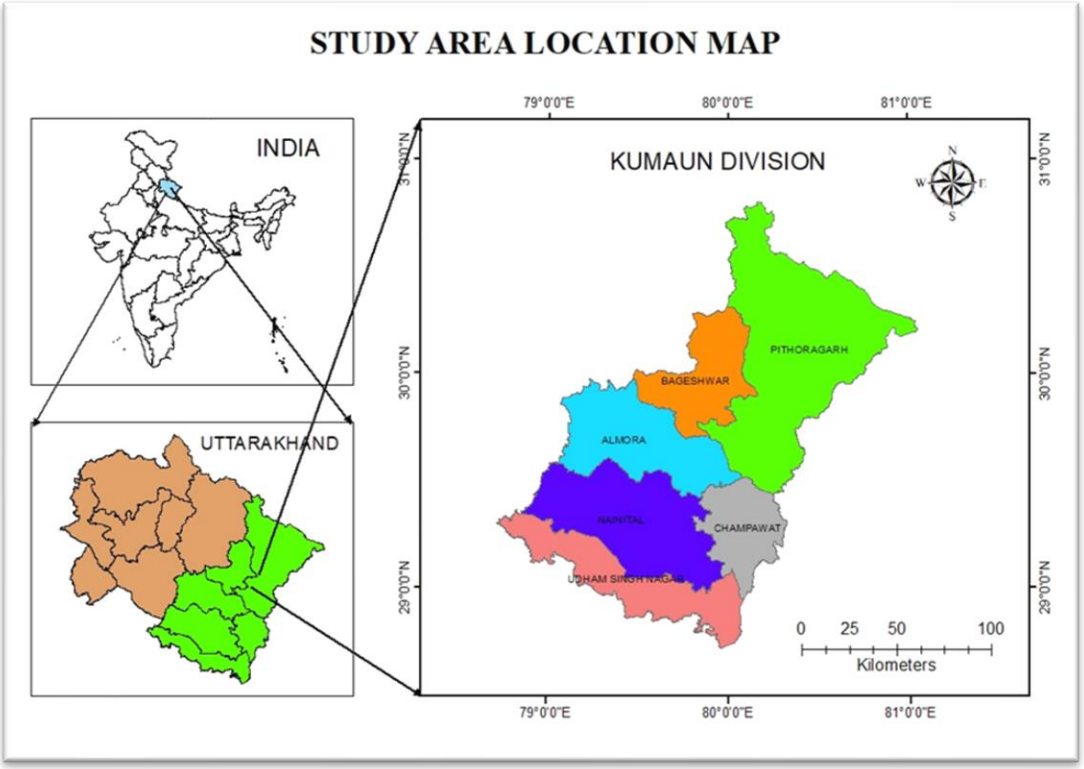

स्रोत: सर्वे ऑफ इंडिया

प्राकृतिक रूप से उत्तराखंड राज्य जैव विविधता से परिपूर्ण राज्य है। यहाँ पर पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्रों में विविध जीव–जंतुओं, पेड़–पौधों की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं। अनेक विश्व प्रसिद्ध एवं प्राकृतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र उत्तराखंड में पाए जाते हैं जैसे फूलों की घाटी, कार्बेट नेशनल पार्क, नंदा देवी पर्वत क्षेत्र, राजाजी नेशनल पार्क इत्यादि। अपनी पर्वतीय सुन्दरता एवं प्राकृतिक विविधता के चलते यह पर्यटको के लिए आकर्षक एवं साहसिक खेलों के लिए पसन्दीदा राज्य बन गया है।

भौगोलिक दृष्टि से इस शोध पत्र के अध्ययन का क्षेत्र कुमायूं कहलाता है जो उत्तर दिशा में तिब्बत, दक्षिण में उत्तर प्रदेश राज्य, पूर्व में नेपाल तथा पश्चिम में उत्तराखंड के गढ़वाल पर्वतीय क्षेत्र से घिरा हुआ है। कुमायूं क्षेत्र में अधिकांश क्षेत्र हिमालय पर्वतों से भरा हुआ है। कुमायूं क्षेत्र में दो उप पर्वतीय क्षेत्र शामिल हैं जिन्हें तराई एवं भाबर कहा जाता है। इस अध्ययन में अधिकांशत आंकड़े द्वितीयक स्रोतों से लिए गए हैं।

इस शोधपत्र में उत्तराखंड के कुमायूं मंडल में आर्थिक वृद्धि एवं विकास के क्रम का अध्ययन करते हुए यहाँ की मुख्य समस्या प्रवसन के कारणों एवं प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था –

यहाँ पर लगभग सभी कृषि भौगोलिक जलवायु क्षेत्र पाए जाते हैं जो विभिन्न फूलों की खेती बागवानी एवं अन्य खाद्यान्न फसलों के व्यवसायिक उत्पादन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है इसके अलावा राज्य में अनेक दुर्लभ औषधीय, सुगंधित एवं चिकित्सीय पौधों की लगभग 200 प्रजातियाँ पाई जाती है, जो स्थानीय व्यवसायों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आर्थिक लाभ अर्जित करने का अवसर प्रदान करती है। उत्तराखंड मुख्य रूप से अपने आर्थिक विकास के लिए कृषि एवं उससे संबंधित व्यवसाय पर निर्भर करता है, परन्तु राज्य का 86 प्रतिशत हिस्सा पहाड़ियों से बना हुआ है, इसीलिए अन्य राज्यों की अपेक्षा यहाँ की प्रति हेक्टेयर उपज अत्यधिक कम होती है। इसके बावजूद राज्य में गन्ना, गेहूँ, चावल, आलू एवं अन्य फसलें सफलता पूर्वक उगाई जाती है। कृषि के अलावा राज्य के राजस्व के लिए पर्यटन क्षेत्र भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जो राज्य की प्राकृतिक सुन्दरता के अनुकूल प्रत्येक क्षेत्र के विकास के अवसर प्रदान करता है। राज्य की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से अधिक है, जो यहाँ के आर्थिक परिदृश्य को प्रदर्शित करती है।

Year	GSDP(USD) Billion	NSDP(USD) Billion	Growth rate (%)
2004-2005	05.53	04.97	12.9
2005-2006	06.59	06.11	14.0

2006-2007	08.15	07.24	14.1
2007-2008	11.39	10.00	17.8
2008-2009	12.14	10.54	12.6
2009-2010	14.92	12.89	11.1
2010-2011	18.41	16.00	7.3
2011-2012	20.90	18.30	8.3
2012-2013	19.86	17.26	9.9
2013-2014	20.31	17.67	8.43
2014-2015	23.01	20.03	9.34

SOURCE- GSDP, NSDP and Growth rate of Uttarakhand.

राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से पर्यटन, खनिज संसाधनो के उत्खनन, कृषि, लघु उद्योगों पर निर्भर है, परंतु उद्योगों की स्थापना के लिए सर्वाधिक अनुकूलमैदानी क्षेत्र होता है, जो कि उत्तराखंड में सीमित स्तर पर उपलब्ध है जो राज्य में उद्योगों के विकास को सीमित कर देता है। इसीलिए अन्य राज्यों की अपेक्षा उत्तराखंड राज्य में उद्योगों की स्थापना अपेक्षाकृत कम हुई है तथा राज्य के अन्दर मैदानी इलाकों में पर्वतीय क्षेत्रों की अपेक्षा कहीं अधिक उद्योगों की स्थापना हुई है जो पहाड़ी क्षेत्रों से मैदान की ओर रोजगार के अवसर की उपलब्धता के चलते प्रवसन का मुख्य कारण बन गई है।

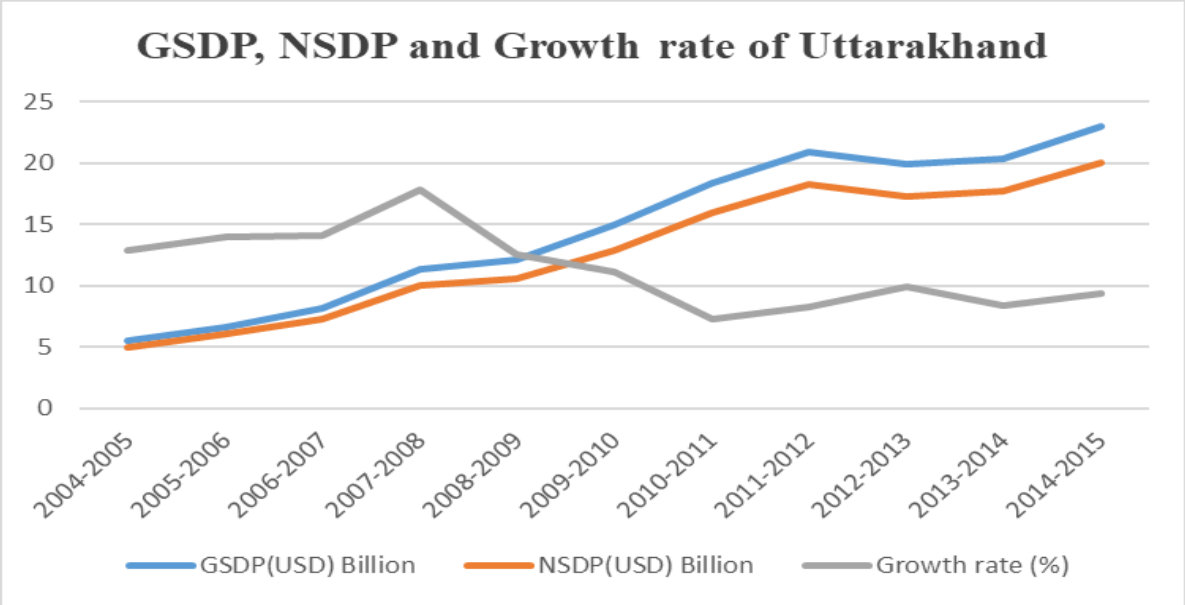

उत्तराखंड का कुमाऊं क्षेत्र राज्य के अन्य क्षेत्रों के साथ आर्थिक विकास के समान स्तर को प्राप्त करने तथा अपनी पर्यावरणीय विशेषताओं को सुरक्षित रखने की चुनौतियों का सामना कर रहा है। कुमाऊं क्षेत्र की पहाड़ियों में अनेक दुर्गम भू–भाग एवं स्थलाकृतिया स्थित है जहाँ अनेक छोटे–छोटे गाँव बसे हुए हैं। इनमें भूमि के आधार पर अधिकांश छोटे–छोटे भूमिधारक कृषि करते हैं। जो पहाड़ी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था का मुख्य साधन है। परन्तु यहाँ के बुनियादी ढाँचा का स्तर अत्यंत दयनीय स्थिति में है।

कुमायूं क्षेत्र का सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय विकास विभिन्न उद्योग धन्धो, हथकरघा उद्योगो एवं कृषि में लगे हुए मजदूरों की निपुणताओ एवं उनके आर्थिक विकास पर निर्भर रहा है, यद्यपि कुमाऊं क्षेत्र प्राकृतिक सुन्दरता एवं अनेक प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। लेकिन इसकी कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ इनके उपभोग को अत्यधिक सीमित कर देती है। इसके अलावा यहाँ की तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या व इन संसाधनों के अवैज्ञानिक तथा अनुचित उपयोग ने यहाँ के विकास को अवरुद्ध कर दिया है। जिसके चलते कुमायूं क्षेत्र की पहचान अविकसित व पिछड़े क्षेत्र के रूप में होने लगी है।

किसी भी क्षेत्र का विकास वहाँ उपस्थित बुनियादी ढांचे के स्तर पर निर्भर करता है। जिसके अन्तर्गत उचित व विकसित परिवहन सुविधाएं, ऊर्जा संसाधन, उच्च स्तरीय निवेश, व कुशल श्रमिकों की उपलब्धता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, परन्तु कुमायूं क्षेत्र की दुर्गमता ने इन सभी की उपलब्धता एवं निवेश की उपलब्धता को रोक दिया है, जिससे बुनियादी ढाँचे के स्तर पर कुमायूं क्षेत्र भारत के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा पिछड़ा हुआ है। जिसे दूर करने के लिए निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता है। अगर हम कृषि क्षेत्र की बात करें तो कुमायूं क्षेत्र के लगभग 15 प्रतिशत भाग पर कृषि की जाती है जबकि अधिकांश जनता के लिए यह जीविका का प्रमुख साधन है इसलिए उद्योगों के साथ–साथ कृषि के विकास पर भी अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

कुमायूं क्षेत्र में निवेश के लिए अनेक क्षेत्र सुअवसर प्रदान करते हैं जैसे पर्यटन, कृषि, बागवानी, दवाइयों का निर्माण एवं अन्य उत्पाद, पर आधारित उद्योग धन्धे जो उत्तराखंड राज्य की अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान निभाने की क्षमता रखते हैं। किसी राज्य का विकास मात्र कृषि के विकास पर नहीं किया जा सकता परन्तु अगर कृषि क्षेत्र के साथ–साथ उद्योग व सेवा क्षेत्र का भी

विकास हो तो वह राज्य अन्य राज्यों से विकास के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने में सफल होता है उत्तराखंड राज्य उद्योग धन्धे व सेवा क्षेत्र के लिए विशेष रूप से निवेश आकर्षित करने की लिए अनेक प्रकार से विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रयत्नशील है।

उद्योगों के विकास के लिए तीन कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिनमें से प्रथम कच्चे माल की उपलब्धता द्वितीय सस्ते व कुशल श्रमिकों की उपलब्धता तथा तीसरा कारक उच्च स्तरीय परिवहन सुविधा है। जिनमें से कुमायूं क्षेत्र के पर्वतीय इलाके परिवहन सुविधाओं के स्तर पर पिछड़े हुए हैं इसलिए अधिकांश उद्योग धन्धे यहाँ की मैदानी क्षेत्र में ही स्थापित हुए हैं। हालांकि उत्तराखंड राज्य में सिडकुल द्वारा विभिन्न उद्योगों को कुमायूं क्षेत्र में स्थापित करने के लिए विभिन्न स्तरीय परियोजनाएँ चलाई जा रही है इनमें से प्रमुख रूप से पर्यटन उद्योग खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, वन आधारित उद्योग तथा बागवानी प्रमुख है।

प्रशासनिक स्तर पर उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में पर्यटन उद्योग के विकास के लिए यथासम्भव प्रयास नहीं किए गए हैं जिसके कारण यहाँ का पर्यटन उद्योग अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा पिछड़ा हुआ है। जबकि यहाँ इसके विकास की अनंत सम्भावनाएं विद्यमान है जो कि इस क्षेत्र में अनेक खूबसूरत घाटियों मंदिरों झरनों व ग्लेशियर स्थित हैं। जो पर्यटन को आकर्षित करने की अपार क्षमता रखते है, क्योंकि पर्वतीय क्षेत्र का मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा विकास पिछड़ा हुआ है या अधिकांश क्षेत्र में विकास हुआ ही नहीं है। इसलिए यहाँ की स्थानीय जनता अपनी साधारण आवश्यकता की पूर्ति के लिए भी संघर्ष करती नजर आती है।

कुमायूं क्षेत्र में गहरी जड़ें जमा चुकी गरीबी एवं बेरोजगारी के पीछे मुख्य कारण पर्याप्त सरल एवं उचित समय पर वित्त की उपलब्धता रहा है। इसीलिए ग्रामीण कुमायूं क्षेत्र में रोजगार के लिए आज भी श्रमिक अधिकांश रूप से मनरेगा जैसी सरकारी योजनाओं पर निर्भर रहते हैं। अगर हम पिछले दशक में कुमायूं क्षेत्र के विभिन्न जिलों की जनसंख्या में हुई वृद्धि को देखते हैं। तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पर्वतीय क्षेत्रों की अपेक्षा मैदानी क्षेत्रों में जनसंख्या की वृद्धि दर कहीं अधिक है इसमें मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्रों से मैदानी क्षेत्रों की ओर लोगों का हुआ प्रवसन ही मुख्य कारण है। जिसके कारण लिंगानुपात पर्वतीय क्षेत्रों में बड़ा है तथा मैदानी क्षेत्रों में घटा है क्योंकि प्रवचन

के दौरान स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष ज्यादा संख्या में एक जगह से दूसरी जगह पलायन करते रहते हैं।

प्रवासन –

जहाँ तक प्रवसन का सवाल है तो व्यक्तिगत, पारिवारिक या सामूहिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थाई रूप से विभिन्न कारणवश बसने की इच्छा से चले जाना प्रवसन कहलाता है। भारत में प्राचीन काल से ही लोग एक जगह से दूसरी जगह प्रवसन करते रहे हैं परन्तु वर्तमान काल में कुमायूं जैसे क्षेत्र से ग्रामीण से ग्रामीण, ग्रामीण से नगरीय प्रवसन वृहद स्तर पर हो रहा है। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों पर अनेक नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं।

पर्वतीय क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन का मुख्य कारण क्षेत्रीय पिछड़ापन, जोतों का छोटा आकार, बड़े स्तर पर बेरोजगारी की समस्या, रोजगार की कम उपलब्धता और ग्रामीण आबादी की तीव्र प्राकृतिक वृद्धि इत्यादि है। जिसके कारण लोग हमेशा काम की तलाश में तथा अन्य पर्यावरणीय कारणों से अपने घर छोड़कर नगरों में चले जाते हैं।

उत्तराखंड में, ग्रामीण से ग्रामीण प्रवास 2001 में सबसे अधिक था, जो कुल घरेलू प्रवास का 54.7 प्रतिशत था। हालांकि, पिछले दशक में हिस्सेदारी में गिरावट आई है, जबकि 2011 में ग्रामीण से शहरी प्रवास धीरे–धीरे 21.1 प्रतिशत से बढ़कर 32 प्रतिशत हो गया है। उत्तराखंड की 2011 की जनगणना के अनुसार, 1053 गाँवों में कोई निवासी नहीं है और अन्य 405 गांवों की आबादी 10 से कम है। इसमें से 60 प्रतिशत गाँव कुमाऊं क्षेत्र के हैं। ऐसे गांवों की संख्या पिछले 4 वर्षों में भारी वर्षा के कारण भूकंप और आकस्मिक बाढ़ के बाद विशेष रूप से वृद्धि हुई है। कुमाऊं क्षेत्र के लिए प्रवास कोई नई बात नहीं है, लेकिन 2011 की जनगणना के आंकड़े और कुछ अन्य हालिया रिपोर्ट बताते हैं कि कुमाऊं क्षेत्र के पहाड़ी क्षेत्रों से प्रवास की दर 2000 में बनने के बाद बढ़ी है। कुमाऊं क्षेत्र से प्रवासन में तेजी देखी गई है। पिछले 5 वर्षों में पहाड़ियों से मैदानों तक भारी प्रवासन के कारण कुमाऊँ क्षेत्र के मैदानी इलाकों की जनसंख्या में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

प्रवासन के कारण –

प्रवसन के कारणों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों आकर्षक व प्रतिकर्षक में विभाजित किया जा सकता है। आकर्षक कारक में कारक है जो किसी क्षेत्र की और प्रवसन को आकर्षण प्रदान करते हैं। जैसे रोजगार शिक्षा स्वास्थ्य की अधिक बेहतर सुविधाएं व अधिक स्वतंत्रता इत्यादि। वही प्रतिकर्षक कारक वे कारक होते हैं जो स्थानीय लोगों को अपने मूल स्थान के प्रति लगाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे सामाजिक आर्थिक धार्मिक व सांस्कृतिक भेदभाव तथा रोजगार शिक्षा स्वास्थ्य के कम स्तर इत्यादि।

आर्थिक कारण –

कुमाऊं क्षेत्र मे गाँव से शहरों की ओर पलायन का मुख्य कारण गाँव में खराब आर्थिक स्थिति व रोजगार के अवसरों की कमी है। कुमायूं क्षेत्र अधिकांश पहाड़ी क्षेत्र है। इसलिए मैदानों की अपेक्षा यहाँ की कृषि दयनीय स्थिति में है इसलिए भूमि पर सीमित कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता के कारण जनसंख्या का दबाव अत्यधिक है। जिससे अधिकांश आबादी रोजगार के अवसरों व अधिक सुलभता की आशा में मैदानी इलाकों की ओर प्रवसन करने के लिए मजबूर होती है। कृषि क्षेत्र में उद्योग, सेवा क्षेत्र की अपेक्षाकृत आय का स्तर भी निम्न होता है। इसलिए लोग कृषि छोड़ कर उद्योग व सेवा क्षेत्रों में अधिक आय की प्राप्ति के लिए गाँव से शहरों की ओर पलायन करते हैं। शहरों में गाँव की अपेक्षा अधिक शैक्षिक स्वास्थ्य सेवाओं का उच्च स्तर, मजदूरी की उच्च दरें इत्यादि है जो पहाड़ों से मैदानों की ओर जनसंख्या को लाने का कारण बनते हैं।

जनसंख्या की उच्च वृद्धि –

गाँव मे शहरों की अपेक्षा जनसंख्या की वृद्धि दर उच्च होती है इसलिए अधिक जनसंख्या के लिए आवास, भोजन, रोजगार एवं अन्य सुविधाओं की सीमित उपलब्धता के कारण अतिरिक्त जनसंख्या गाँव से शहरों की ओर पलायन करने पर मजबूर होती है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण –

सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण भी पलायन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कुमायूं क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में प्राचीन पारंपरिक मूल्य मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक कठोर व मजबूत हैं। जिसके कारण वहाँ पर जाति, धर्म, आर्थिक स्थिति व अन्य कारणों से अनेक भेदभाव प्रचलित रहते हैं। जो शहरों में सामान्यतः दिखाई नहीं देते हैं, इसलिए शहरों में गाँव की अपेक्षा लोग अधिक स्वतंत्रता पूर्वक व भेदभाव रहित वातावरण में रहते हैं जो गाँव से शहरों की ओर पलायन का एक मुख्य कारण बनता है। वर्तमान में आधुनिक एवं पश्चिमी मूल्य युवाओं को अत्यधिक आकर्षित करते हैं जो सामान्यतः गाँव में हेय दृष्टि से देखे जाते हैं अतः युवा व कमजोर वर्ग के लोग गाँव से शहरों की ओर आकर्षित होते हैं।

भौगोलिक और भौतिक कारण –

कठिन भौगोलिक व भौतिक परिस्थितिकी, जलवायु, निर्मम प्राकृतिक वातावरण तथा प्राकृतिक कारणों से आने वाली बाढ़, भूकम्प, तूफान, पहाड़ दरकने की घटनाएं इत्यादि कारण भी ग्रामीण आबादी के मैदानी इलाकों में आने का कारण बनते हैं।

इसके अलावा पहाड़ी क्षेत्रों से मैदानी क्षेत्रों की ओर पलायन के लिए राज्य सरकार की नीतियाँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसे राज्य सरकार ने मैदानों की अपेक्षा पहाड़ी क्षेत्रों में उद्योग धन्धे व सेवाओं के विकास के लिए अपेक्षाकृत बहुत ही कम प्रयास किए है। जो वहाँ के विकास की कमी का मुख्य कारण बन गए हैं जिससे एक बड़ी जनसंख्या रोजगार के अवसरों से वंचित हो गई है। जो रोजगार के लिए मैदानी क्षेत्रों की ओर पलायन करती रहती है।

कुमाऊँ क्षेत्र में पलायन के प्रमुख कारण –

कुमाऊँ क्षेत्र में प्रवास विभिन्न कारकों के कारण होता है। कुछ कारकों का संक्षेप में नीचे वर्णन किया गया है।

बंजर भूमि –

कुमाऊं क्षेत्र में जोतें आमतौर पर छोटी और खंडित होती हैं। कुमाऊँ मंडल के जलसंभर प्रबंधन निदेशालय के अनुसार, मंडल में औसत जोत लगभग 0.68 हेक्टेयर है, जो कई टुकड़ों में

विभाजित है। यह राष्ट्रीय औसत 1.16 हेक्टेयर प्रति किसान से बहुत कम है। इसका मतलब है कि जिन गाँवों ने हाल के दिनों में प्रवासन देखा है, उन्हें अब सक्रिय कृषि भूमि के बीच–बीच में अनुपयोगी भूमि के कई भूखंडों के प्रबंधन की समस्या से निपटना होगा।

घटता जल स्तर –

कुमाऊँ क्षेत्र के जल स्तर में कमी भी प्रवासन से जुड़ी है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि जिन तीन जिलों ने उच्चतम प्रवासन दर दर्ज की है, उनमें वे जिले भी हैं जिनमें जल स्रोतों में अधिकतम कमी देखी गई है। जिसके परिणाम स्वरूप पहले, पानी की कोई कमी नहीं थी, लेकिन हाल के दिनों में पीने के पानी की भी मौसमी कमी हो गई है, सिंचाई के लिए पानी तो दूर की बात है। जो पलायन का एक महत्वपूर्ण कारण बनता जा रहा है।

रोजगार –

लोग रोजगार की तलाश में ग्रामीण से मैदानी इलाकों में बड़ी संख्या में पलायन करते हैं। कुमाऊँ क्षेत्र में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का कृषि आधार वहाँ रहने वाले सभी लोगों को रोजगार प्रदान नहीं करता है। यहाँ तक कि गाँवों के लघु और कुटीर उद्योग भी कुमाऊं क्षेत्र के पूरे ग्रामीण लोगों को प्रदान करने में विफल रहते हैं। जिसके चलते बड़ी संख्या में लोग कृषि स्तर कार्यों में रोजगार की तलाश की संभावनाओं के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में पलायन करते रहे हैं।

शिक्षा –

कुमाऊँ क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर शैक्षिक सुविधाओं की कमी है और ग्रामीण लोगों को इस उद्देश्य के लिए मैदानी केंद्रों की ओर पलायन करना पड़ता है। इन कारणों के अलावा भी कई अन्य कारण हैं जो लोगों को पलायन करने के लिए मजबूर करते हैं, जैसे सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, बुनियादी ढांचे आदि की कमी।

निष्कर्ष और सुझाव –

उपरोक्त विश्लेषण से, यह स्पष्ट है कि उत्तराखंड राज्य सबसे तेजी से विकास करने वाले राज्यों में से एक है। कुमाऊं क्षेत्र के पहाड़ी जिलों में लम्बे समय से प्रतीक्षित विकास ने इन जिलों के विकास को कुमाऊं क्षेत्र के अन्य मैदानी जिलों की तुलना में पीछे धकेल दिया है। इसके परिणामस्वरूप इन जिलों से प्रमुख कार्यबल का लगातार पलायन हुआ है, जिसमें बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों के पुरुष, युवा शामिल हैं। इससे इन जिलों की अर्थव्यवस्था पर दबाव पड़ा है। कुमाऊं क्षेत्र के पहाड़ी जिले मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं, उद्योगों की स्थापना मुख्य रूप से क्षेत्र के दो मैदानी जिलों में हुई है, जो इस क्षेत्र में प्रवास का प्रमुख कारण है। पलायन का प्रमुख कारण कुमाऊँ क्षेत्र के पर्वतीय क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए सरकारी पहल की कमी, पर्यटन और कृषि को बढ़ावा देने में विफलता है। अधिक आर्थिक अवसरों से लाभान्वित होने के लिए कुमाऊं क्षेत्रों में शहरों की ओर प्रवास सबसे अधिक दर्ज किया गया है।

अतः राज्य सरकार को कृषि के विकास पर ध्यान देना चाहिए और कुमायूं क्षेत्र के पहाड़ी जिलों में उद्योगों व हथकरघा उद्योगों की स्थापना का प्रावधान करना चाहिए जिससे पहाड़ी क्षेत्रों में रोजगार व स्वरोजगार के अवसर अधिक पैदा हो सके तथा पहाड़ी जिलों में उच्च शिक्षा संस्थानों, स्वास्थ्य सुविधाओं इत्यादि का भी समुचित विकास करना चाहिए जिससे लोगों को इनके लिए मैदानी क्षेत्रों की ओर न जाना पड़े भौगोलिक व भौतिक कारकों के प्रभाव को कम करने के लिए राज्य सरकार को इन क्षेत्रों में बेहतर बुनियादी ढाँचे का विकास करना चाहिए जिससे लोग स्थानीय स्तर पर ही भयमुक्त होकर अपना विकास कर सकें।

संदर्भ सूचीः

1. देशिगकर, पी (2009), ह्यूमन डेवलपमेंट रिसर्च पेपर, उत्तराखंड, पृ0 22–23।
2. मेहता, एम (2008), कुमाऊं क्षेत्र का लिंग मूल्यांकन live. पृ0 71–78
3. शोभन सिंह, (2009), कुमाऊं क्षेत्र के पिछड़े क्षेत्रों का औद्योगिक विकास, हिमालयन पब्लिशिंग हाउस, पृ0 131–132।
4. डेटा, एस.के., (2014) उत्तराखंड, विजन एंड एक्शन प्रोग्राम, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, पृ0 82–87।

5. आर्थिक विकास का एक नया युग – उत्तराखंड अगला गंतव्य (2013)।
6. बिश, सोनाली, (2015), कुमाऊं क्षेत्र में चिंता और चुनौतियां, त्रिशूल प्रकाशन देहरादून, पीपी –17–21।
7. विकास अध्ययन केंद्र (2001–2002), (2012–2013) भारत में आंतरिक और क्षेत्रीय असमानताएं; दिल्ली, सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज।
8. नैनीताल में ग्रामीण गैर–कृषि क्षेत्र का सर्वेक्षण (2013) बैंकर्स इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेंट देहरादून।
9. उत्तराखंड संभाग राज्य योजना की सांख्यिकीय डायरी (2014–15)।
10. भारत की जनगणना 2001 और 2011, रजिस्ट्रार और जनगणना आयुक्त का कार्यालय, भारत।
11. नवामी, लोकेश (2015) उत्तराखंड ईयर बुक।
12. द हिंदू, 14 जून 2014, भूमिका जोशी, पृ0 67।